आज का पुरुषार्थ 11 June 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" बाबा का प्यार अनुभव करना है तो उनके रचना को भी प्यार करे, उन आत्माओं को अपनापन मेहसूस कराते चले "*

प्रभु प्रेम कितनी **पवित्र** चीज़ है। कहा हम प्यासे थे .. " *हे भगवान अपने प्यार के एक बुंद दे दो .. थोड़ा सा प्यार दे दो*"

और कहा इतना बड़ा भाग्य मिला कि हम उनके बच्चे बन गये। और उनका **सम्पूर्ण प्यार हम पर बरसने लगा।**

जैसे छोटे बच्चों को माँ बाप कितना प्यार करते है, हम भी उनके बच्चे बन गये। भले ही कोई छोटे है कोई बड़े है। लेकिन उनका **प्यार समान रूप से सबको मिलता है।**

जब कोई छोटा बच्चा होता है, तो बाबा उसको ज्यादा प्यार देते है। लेकिन जब हम बड़े हो जाते है, तो **हमें भी दूसरों को प्यार देना होता है।**

और जब हम अशरीरी होंगे तो परमात्मम प्यार को अनुभव करते रहेंगे। तो आइये आज संकल्प करे हमें एक के प्यार में **मग्न** होने के अनुभव करने है।

भगवान से यदि बहुत प्यार भरी **रूहरिहान** हम करे, बातें करे, तो उसका आनन्द बहुत ही अनुपम होता है। हम आदत डाले बाबा से प्यार भरी बातें करने का।

प्यार तो बाबा हमें बहुत करते है। लेकिन हमारे मन में उनके लिए प्यार तब उभरता है जब हमें यह याद रहता है **कि बाबा ने हमारे लिए क्या क्या किया है! क्या क्या उन्होंने हमें दिया है!**

अंधकार में भटक रहे थे, **ज्ञान का प्रकाश** लेकर आ गये हमारे पास। मंजिल कहीं भी नहीं दिखती थी, मंजिल दिखा दिए। और केवल जाने को नहीं कहा, हाथ पकड़कर ले जाने लगे।

विकारों की और व्यसनों की गर्त में डूबे हुए थे, बाबा ने आकर हमें **निर्मल और स्वच्छ कर दिया।** दुःखों की पहाड़ सिर पर गिर रहे थे, अशान्ति जीवन में छाई हुई थी, बाबा ने सबकुछ हर लिया।

तो हम बाबा की जो देन है, उसने जो उपकार हम पर किये है, उन्हें याद करे। तो बाबा बहुत **प्यारा** लगेगा। हमें लगेगा उनसे प्यारा और कोई नहीं।

वही सत्यम शिवम और सुन्दरम है। वो बहुत कल्याणकारी है, बहुत सुन्दर भी है। अति गुणवान है, इसलिए बहुत प्यारा है। सम्पूर्ण पवित्र है, इसलिए बहुत प्यारा है।

बिल्कुल देह से न्यारा है, निराकार है, इसलिए बहुत प्यारा है। तो हम भी बाबा के प्यार में मग्न होने का अभ्यास करे। और बाबा के यह महावाक्य याद करे ...

" *एक के प्यार में मग्न होना ही सम्पूर्ण ज्ञान है*" ... बहुत सुन्दर महावाक्य है। बहुत बड़ा सीक्रेट है कि ...

" अगर हम सम्पूर्ण ज्ञान से सम्पन्न है, अगर ज्ञान का चिन्तन हमारे पास है, तो हम एक शिवबाबा के प्यार में लम्बे काल तक मग्न हो सकते है "

इसके लिए जरूरी है ....

" उनसे रूहरिहान करना "

इसके लिए जरूरी है ....

" उसके उपकारों को याद करते रहना, अपने को उसके समीप अनुभव करते रहना "

यह भी जरूरी है कि, जो उनके और बच्चे है उन्हें भी हम बहुत प्यार दे, अपनापन अनुभव कराये।

यदि मेरा मन दुसरों के प्रति नफ़रत और घृणा से भरा होगा तो यह नफ़रत और घृणा indirectly बाबा तक जाती है। और हम उनके प्यार से वंचित हो जाते है।

इसलिये हमारे शिवबाबा से प्यार है तो उनके रचना से भी हमारे प्यार होना चाहिए। अगर बाबा से प्यार है और रचना से प्यार नहीं है तो बाबा कहते है

" मैं ऐसी प्यार को स्वीकार नहीं करता "

तो आज सारा दिन बाबा को बहुत प्यार भरी दृष्टि से देखेंगे .... " वाह बाबा, हमारे जैसा बाबा किसी को नहीं .. बाबा आपको पाके हम निहाल हो गये ..

आपका साथ पाकर हम धन्य धन्य हो गये .. जब से आप मिले हमने जीवन जीना सीख लिया "

इसतरह की बातें सारा दिन करते रहेंगे और फ़ील करेंगे ....

" प्रसन्न होकर बाबा अपनी शक्तियों की किरणें हम पड़ डाल रही है "

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org